भूमिका

जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ

जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ

बाबा नागार्जुन जनप्राण के कवि हैं। उनकी कविता जनता से सीधे संवाद करती है। इस सार्थक संवाद की एक कड़ी के रूप में वे अपने को और दूसरी कड़ी के रूप में जनता को देखते थे। नागार्जुन की यही जनपक्षधरता उन्हें हिंदी कविता में पृथक पहचान दिलाती है। जनकवि अपने समय और समाज का यथार्थ चित्रण करता है। वह यथार्थ की धरातल पर विचरण करते हुए अपने आसपास की ज़िंदगी से गुजरता है और उसे अपनी कविता में अभिव्यक्त करता है। वह समाज के उत्थान के लिए स्वस्थ राजनीति पर बल देता है। समाज की शोषित-पीड़ित जनता की आवाज को कवि ने अपनी कविता में राजनीतिक स्वर देकर और मुखर बना दिया है। नागार्जुन की कविता में अभिव्यक्त राजनीतिक व्यंग्य उन्हें विशिष्ट पहचान दिलाता है।

दरअसल हमारा समाज लोकतान्त्रिक व्यवस्था से जुड़ा हुआ है। इसलिए साहित्य में समयानुसार लोकतांत्रिक-राजनीतिक हलचलों की जीवंत तस्वीर देखने को मिलती है। आरंभ से ही राजनीति मानव जीवन पर हावी रही है। रचनाकार जिस परिवेश में जीता है, वह उनकी रचनाओं में जाने-अंजाने ढंग से आए बिना नहीं रहता। ऐसे में जनकवि नागार्जुन का राजनीति से अछूता रहना मुश्किल था। कबीर के बाद हिंदी साहित्याकाश में व्यंग्य और विद्रोह की तीखी अनुगूँज नागार्जुन की कविता में ही सुनाई पड़ती है, इसीलिए सुप्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह ने नागार्जुन को 'आधुनिक कबीर' कहकर संबोधित किया। समकालीन समाज नागार्जुन के समाज से बहुत भिन्न नहीं है, इसमें तमाम प्रकार के आर्थिक-राजनीतिक शोषण हैं। यानी आज़ादी से पूर्व की समस्याएँ आज भी मुंह बाए खड़ी हैं। वर्तमान समय में देश की हालत सुदृढ़ नहीं हुई है। आज भी राजनीति के नाम पर राजनेता गरीब जनता का खून चूस रहे हैं। किसान, मजदूर, शोषित-पीड़ित जनता दमन की चक्की में पिस रही है। सारी योजनाएँ हवा-हवाई हो रही हैं। इन तमाम कुव्यवस्थाओं के प्रति आज भी नागार्जुन- जैसे भारतीय क्रांति के सहयात्री की परम आवश्यकता दिखाई पड़ती है। समाज में जो कुछ घटित हुआ है या आज हो रहा है, उनकी जीवंत तस्वीर नागार्जुन की कविता में मौजूद है। व्यवस्था की विसंगतियों का खुलकर पूरे दमखम के साथ विरोध करने के कारण नागार्जुन आज भी सर्वाधिक प्रासंगिक हैं।

नागार्जुन पर अनेक कार्य हुए हैं, किन्तु उनकी रचना की विविधता के कारण समयानुसार उन पर शोध-कार्य के आसार बढ़ते जा रहे हैं। अतः 'नागार्जुन की राजनीतिक कविताएँ: जे. पी. आंदोलन' (विशेष संदर्भ: खिचड़ी विप्लव देखा हमने) विषयक प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध ठीक इसी कड़ी में कई प्रश्नों के हल को लेकर पूर्ण हुआ है। मेरी जानकारी के अनुसार इस विषय पर शोध-कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में नागार्जुन के 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने' काव्य-संग्रह के माध्यम से कवि के जे. पी. आंदोलन के प्रति हुए मोहभंग का विश्लेषण किया गया है। जिस जे. पी. आंदोलन में कवि आरंभ में पूरे दमखम के साथ कूद पड़ते हैं, आंदोलन के स्वर को कविता में उतारते हैं, उसी आंदोलन का आगे चलकर पुरजोर विरोध भी करते हैं। नागार्जुन के इस विचलन की प्रस्तुत शोध में जांच-पड़ताल की गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में भूमिका और उपसंहार के अतिरिक्त चार अध्याय हैं। इस लघु शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय 'आठवें दशक का युगबोध और प्रगतिशील हिंदी कविता' है जिसमें आठवें दशक (1970-1980) के युगबोध को दिखाया गया है। साथ ही आठवें दशक की प्रगतिशील हिंदी कविता के स्वरूप की संक्षिप्त विवेचना की गई है।

द्वितीय अध्याय में नागार्जुन की कविता में व्याप्त राजनीतिक चेतना को दिखाया गया है, साथ ही 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने' काव्य-संग्रह के माध्यम से कवि के राजनीतिक व्यंग्य की चर्चा की गई है।

तृतीय अध्याय में जे. पी. आंदोलन के परिदृश्य को दिखाते हुए आंदोलन के उतार-चढ़ाव की व्यापक चर्चा की गई है। जे. पी. के जीवन-संघर्ष के साथ-साथ 'संपूर्ण क्रांति' की अवधारणा का भी उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में जनकवि नागार्जुन के 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने' काव्य-संग्रह के माध्यम से जे. पी. आंदोलन के प्रति कवि के हुए मोहभंग का बारीकी के साथ विश्लेषण किया गया है। आंदोलन में साहित्य की भागीदारी के अलग-अलग मायने तथा तेवर को निष्कर्षतः दिखाने का भरसक प्रयास किया गया है। इस दौरान जनकवि की असाधारण विवेकशीलता भी देखने को मिलती है।

नागार्जुन के प्रति मेरी स्नातकोत्तर से ही चली आ रही अतृप्त रुचि ने शोध-कार्य के दौरान सदैव भरपूर ऊर्जा प्रदान की।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे लघु शोध-प्रबंध को न केवल अपने कुशल निर्देशन, उचित मार्गदर्शन एवं महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के सहयोग से सहज बनाया, बल्कि समय-समय पर मेरे लघु शोध-प्रबंध की गहराई से जांच-पड़ताल की। साथ ही विभागाध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अमूल्य समय देकर मेरी शोध-विषय संबंधी जिज्ञासा को शांत किया।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ तमाम अध्यापकों का, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से समय-समय पर कई महत्त्वपूर्ण सुझाव देकर मुझे शोध-लेखन के समय बल प्रदान किया।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपने अभिन्न मित्र रवि कुमार झा, रामलखन कुमार तथा चन्दन कुमार का, जिन्होंने समय-समय पर शोध-सामग्री तथा टंकण के द्वारा अनवरत सहयोग देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। साथ ही आभार व्यक्त करता हूँ म. गां. अं. हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के महापंडित राहुल सांकृत्यायन के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं कर्मियों का, जिन्होंने मुझे अधिकाधिक पुस्तकों की छायाप्रति कराने हेतु त्वरित स्वीकृति दी।

मैंने लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करने के दौरान कमियों को दूर करने का प्रयास किया है, फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

अमित कुमार